हँसते समय सिर नीचा कर लेता है।। हँसी बंद होने पर उसने कहा, "वाह रे कानपुर! तब तो नरकपुर भी होगा?" और जब हीराबाई ने कहा कि नरकपुर भी है, तो वह हँसते-हँसते दुहरा हो गया।

(ग) शाहनी चौंक पड़ी। देर-मेर घर में मुझे देर! आँसुओं को भँवर में न जाने कहाँ से विद्रोह उमड़ पड़ा। मैं पुरखों के इस बड़े घर की रानी और यह मेरे ही अन्न पर पले हुए... नहीं, यह सब कुछ नहीं। ठीक है-देर हो रही है, देर हो रही है। शाहनी के कानों में यही गूंज रहा है। देर हो रही है-पर नहीं, शाहनी रो-रोकर नहीं, शान से निकलेगी इस पुरखों के घर से, मान से लाँघेगी यह देहरी, जिस पर एक दिन वह रानी बनकर आ खड़ी हुई थी।

अथवा

सिद्धेश्वरी की समझ में नहीं आ रहा था कि उसके दिल में क्या हो गया है-जैसे कुछ काट रहा हो। पंखे को जरा और जोर से घुमाती हुई बोली, "अभी-अभी खाकर काम पर गया है। कह रहा था कि कुछ दिनों में नौकरी लग जाएगी। हमेशा 'बाबूजी-बाबूजी' किए रहता है। बोला-बाबूजी देवता के समान हैं।"

03.01.24(M)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Maitreyi College LIBRARY Chanakya Puri, New Delhi-110021

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5465 **G**

Unique Paper Code : 12051303

Name of the Paper : Hindi Kahani

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर लहना सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'पूस की रात' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

2. 'तीसरी कसम' कहानी का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

P.T.O.

munotes.in

अथवा

'चीफ की दावत' कहानी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. शिल्प की दृष्टि से 'सिक्का बदल गया' कहानी की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'वापसी' कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

4. 'जंगल जातकम्' कहानी की प्रतीकात्मकता स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'घुसपैठिये' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) "चार दिन तक पलक नहीं झँपी। बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही। मुझे तो संगीन चढ़ाकर मार्च का हुक्म मिल जाए। फिर सात जरमनों को अकेला मारकर न लोटूँ तो मुझे दरबार साहब की देहली पर मत्था टेकना नसीब न हो। पाजी कहीं के, कलों के घोड़े संगीन देखते ही मुँह फाड़ देते हैं और पैर पकड़ने लगते हैं। यो अंधेरे में तीस-तीस मन का गोला फेंकते हैं।

munotes.in

अथवा

दस बज चुका था। मैंने देखा कि उस निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रुठ रही थी। भालू मनाने चला था। ब्याह की तैयारी थीय यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था। तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे।

(ख) मैं कुछ बोला नहीं मेरा मन जाने कैसे गंभीर प्रेम के भाव से आशुतोष के प्रति उमड़ पड़ा था। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ठीक इस समय आशुतोष को हमें अपनी सहानुभूति से वंचित नहीं करना चाहिए। बल्कि कुछ अतिरिक्त स्नेह इस समय बालक को मिलना चाहिए। मुझे यह एक भारी दुर्घटना मालूम होती थी। मालूम होता था कि अगर आशुतोष ने चोरी की है तो उसका इतना दोष नहीं है; बल्कि यह हमारे ऊपर बड़ा भारी इल्जाम है। बच्चे में चोरी की आदत भयावह हो सकती है।

अथवा

हीराबाई ने हिरामन के जैसा निश्छल आदमी बहुत कम देखा है। पूछा, 'आपका घर कौन जिल्ला में पड़ता है?' कानपुर नाम सुनते ही जो उसकी हँसी छूटी, तो बैल भड़क उठे। हिरामन